Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

Volume-B

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-24

(CDLXX) 470

किन्नर विमर्श

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	किन्नरों के जीवन का दस्तावेज (नीरजा माधव के 'यमदीप'उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	प्रो. बेवले ए. जे.	1
2	हिंदी कविता और किन्नर विमर्श	डॉ. सुजितसिंह परिहार	4
3	तुलसीदास के रामचरित मानस में 'किन्नर'	प्रो. डॉ. हाशमबेग मिर्जा, सिनगरवार पांडूरंग गिरजप्पा	8
4	हिंदी कविता और किन्नर विमर्श	प्रियंका अशोक जैसवार	15
5	किन्नर समाज का त्रासद जीवन : एक चिंतन	प्रो. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड	19
6	किन्नर जीवन समस्याओं से अभिशप्त	पटेल निर्मलाबहन इच्छुभाई, डॉ. महेश एम.पटेल	22
7	हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति	डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्रीदेवी	26
8	हिंदी कविताओं में किन्नर विमर्श	प्रा. डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे	29
9	'सडक' और 'तमन्ना' फिल्म में चित्रित किन्नर जीवन	प्रा. डॉ. देशपांडे वैशाली	34
10	नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' में किन्नरों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक चुनौतियां	अर्चना बलवंत देशमुख	37
11	हिंदी कहानी और किन्नर विमर्श	प्रा.डॉ.सरिता मंजू सिंधी	39
12	यमदीप : किन्नरों की संघर्षगाथा	प्रा. डॉ.पुरुषोत्तम बापूराव व्यवहारे	42
13	समाजका पिछडा वर्ग किन्नर समुदाय	प्रो. डॉ. वंदन बापुराव जाधवज	46
14	मैं क्यों नहीं 'उपन्यास में किन्नर विमर्श।	प्रा.आनंद लोखंडे	50
15	किन्नर समाज का सफरनामा (नाला सोपारा: विशेष संदर्भ)	डॉ सुरैया खान	54
16	किन्नर विमर्श : स्वरुप एवं अवधारणा	प्रो. डॉ. नरसिंगदास ओमप्रकाशजी बंग	58
17	तृतीय पंथियों के जीवन का संघर्षपूर्ण दस्तावेज : तीसरी ताली उपन्यास	डॉ.जयंत ज्ञानोबा बोबडे	61
18	गुलाम मंडी उपन्यास में चित्रित किन्नर समुदाय का जीवन संघर्ष	प्रा. डॉ.पठाण खातून बेगम अकबर खाँन	66
19	किन्नर की जीवन और समस्याएं	ईश्वरी. ए	72
20	हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन	डॉ. रमेश विठोबा कांबळे	77
21	'तीसरी ताली' किन्नर समाज के आजीविका के दर्द का दस्तावेज		81

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-10, अंक - 39-40, जुलाई-दिसंवर 2023

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा
प्रकाशक : विद्यार्थी मंच
प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय
कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव
प्रसार प्रबंधक : रमेश कुमार शर्मा

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : पूर्व कुलपति, हिन्दी विश्वविद्यालय, हावड़ा
डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम वंगाल
डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय
डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर
डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय : सुरेंद्रनाथ कॉलेज, कोलकाता
डॉ. विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, वंगवासी कॉलेज
डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल
डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि वहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (वर्मिंघम, यू.के.)
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम वंगाल

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित एवं वलराम साव - 89107 83904

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (वर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229
कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' : प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात
प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)
डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :
आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन
सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु.
डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

Scanned with CamScanner

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

06 संस्तुति

आलेख

07 सेवाराम त्रिपाठी : हरिशंकर परसाई : अपने समय से मुठभेड़

12 शशिभूषण द्विवेदी : डॉ. रमेश कुंतल मेघ एक विरल प्रतिभा ...

19 डॉ. महात्मा श्रीनाथ पाण्डेय : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की सामाजिक, सांस्कृतिक, चेतना और कबीर

26 योगेश तिवारी : आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक–नोम चोम्स्की

अनुशीलन

30 डॉ. पंकज साहा : मृणालिनीः पुराने जीवन-मूल्यों की टूटन एवं नारी-सशक्तिकरण की छटपटाहट

35 रजत सान्याल : 'चारुलता' सत्यजित रे साहब की एक यादगार फिल्म

37 ऋषिकेश राय : मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में उत्तर आधुनिक तत्व

46 स्नेहा सिंह : कोरोनाकाल और आभासी-पटल को उजागर करती कहानियाँ

विमर्श

50 राजवंती मान : प्रतिबंधित और गुमनाम हिंदी साहित्य

55 डॉ. एस कृष्ण बाबू : शैक्षिक क्षेत्र में साहित्यिक शोधः सीमाएँ, समस्याएँ और संभावनाएँ

शोधार्थी की कलम से

58 मनोज कुमार दास : स्त्री अस्मिता की मौन अभिव्यंजना : सुधा अरोड़ा की कहानियाँ

64 पिंकी झा : 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' में आज का समय

69 पंकज कुमार सिंह : आपातकाल और हिंदी कविता

संस्मृति

73 विनोद साव : आलोचना की अनूठी भंगिमाओं के बीच डॉ. राजेन्द्र मिश्र

कहानी

75 अरुण अर्णव खरे : विला के आँसू

83 मंजुरानी सिंह : सभ्यता का शिकंजा

86 रंजना जायसवाल : तिथि

93 नीरजा हेमेन्द्र : एक छोटी-सी यात्रा...

102 अस्मिता सिंह : बेचारगी

Scanned with CamScanner

आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक—नोम चोम्स्की

-योगेश तिवारी

भाषा, मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। सभ्यता-विकास के विभिन्न चरणों में भाषा ने भी अपना रूप बदलना जारी रखा। भाषा और मानव के संबंधों को समझने और समझाने का काम कई भाषाविदों ने किया। भाषा विज्ञानियों में जो नाम क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए जाने गए, नोम चोम्स्की उनमें से एक है। (पूरा नाम एवराम नोम चोम्स्की)। नोम चोम्स्की एक भाषाविद् के साथ ही दार्शनिक और इतिहासकार के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने अकादमिक तौर पर भाषाविज्ञान में नई स्थापनाएँ देने के साथ ही समकालीन वैश्विक राजनीति पर महत्वपूर्ण स्थापनाएँ दी हैं। अमेरिका की विदेश-नीति, भूमंडलीकरण, नव-उदारवाद, इजराइल-फिलिस्तीन संबंध, पूँजीवाद-साम्यवाद जैसे कई विषय हैं, जिन पर अपनी बेवाक टिप्पणियों के लिए चोम्स्की अपने समकालीनों में खासे चर्चा में रहे हैं।

'आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक' कहे जाने वाले चोम्स्की का जन्म 7 दिसंबर 1928 में संयुक्त राज्य अमेरिका के एक यहूदी परिवार में हुआ। वह अमेरिका के एरिज़ोना विश्वविद्यालय से एक भाषाविद् के रूप में जुड़े रहे। इसके साथ ही उनकी पहचान एक मुखर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी रही। अकादमिक दुनिया में उनकी शुरुआती पहचान एक संरचनावादी भाषाविद् की बनी। संरचनात्मक भाषाविज्ञान के अध्ययन के लिए उन्होंने अपने पूर्ववर्ती भाषाविद ज़ेलिंग हैरिस और दर्शनशास्त्री नेलसन गोडमैन के सिद्धांतों को आधार बनाया। इन सिद्धांतों के आधार पर ही उन्होंने अपने संरचनात्मक भाषाविज्ञान का पक्का ढाँचा खड़ा किया।

सोलह वर्ष की उम्र में चोम्स्की ने पेन्सिल्वेनिया विश्वविद्यालय में दाखिला लिया, लेकिन उनके राजनीतिक विचारों ने उन्हें विश्वविद्यालयी जीवन से विमुख करने का काम किया। कुछ वर्षों बाद ही अमेरिका के शुरुआती संरचनात्मक भाषाविद् ज़ेलिंग हैरिस से मिलने के बाद चोम्स्की शिक्षा की ओर फिर से मुड़े। दरअसल, ज़ेलिंग हैरिस और चोम्स्की एक ही विचारधारा से जुड़े हुए थे। इस तरह चोम्स्की को ज़ेलिंग हैरिस के रूप में एक कुशल मार्गदर्शक और शिक्षक मिल गया। ज़ेलिंग हैरिस के सुझाव पर चोम्स्की ने नेलसन गोडमैन से दर्शनशास्त्र और नाथन फाइन से गणित की शिक्षा ली। ये सारे विद्वान उस समय के अपने क्षेत्र के बड़े विशेषज्ञों में से थे। चोम्स्की ने हैरिस के भाषा संबंधी और नेलसन के दर्शनशास्त्र से जुड़े विचारों को अपने सिद्धांतों के आधार के रूप में अपनाया। इनके आधार पर ही उन्होंने अपने मौलिक विचारों को विस्तार दिया।

संरचनात्मक भाषाविद् गोडमैन का मानना था कि जन्म के समय मानव मस्तिष्क एक खाली स्लेट की तरह होता है। एकदम कोरा। शिशु अभ्यास द्वारा भाषा और व्याकरण सीखता है। दरअसल, यह समाज की सामान्य मान्यता भी है कि मानव मस्तिष्क जन्म के समय एकदम कोरा होता है। चोम्स्की ने इस प्रचलित मान्यता को चुनौती देते हुए अपने तर्कों और आंकड़ों से सिद्ध किया कि शिशु के मस्तिष्क में भाषा ग्रहण करने और उसे व्यक्त करने की क्षमता जन्मजात होती है। यानी वह जन्म से ही अपने मस्तिष्क में भाषा सीखने के मौलिक तत्व लिए रहता है। शिशु की भाषा संबंधी यह क्षमता अपने आसपास के वातावरण से तादाम्य स्थापित कर अपना विकास करती है। यानी, भाषा सीखने और उसे व्यवहार करने में शिशु का परिवेश और संस्कृति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संक्षेप में कहें तो, चोम्स्की के अनुसार—

• मानव जन्म से ही भाषा और व्याकरण सीखने की क्षमता रखता है। यह गुण उसके भीतर जन्मजात होता है। यह नियम दुनिया के किसी भी शिशु पर लागू होता है।

Scanned with CamScanner